बातचीत के बिंदु-07

मजदूर –किसान संघर्ष रैली

सीटू-अखिल भारतीय किसान सभा-अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन

5 सितम्बर 2018

संसद के समक्ष

सम्प्रदायिकता

भारत की जनता खासकर कामकाजी पुरुष एवं महिला जो विभिन्न औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत है , जैसे कार्यालय हो या दुकान एवं विभिन्न अन्य क्षेत्रों में काम करने वाले वर्तमान सरकार जो प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चल रही है, उनकी नीतियों से बुरे तरीके से प्रभावित है I

आज लगातार मूल्यवृद्धि, बेरोजगारी किसान के लिए लागत से कम अनाज के दाम, वेतन का स्थिर रहना, आम आदमी के पहुंच से बाहर शिक्षा और स्वास्थ के साथ अनेक दुस्प्रभाव सरकार के आर्थिक नीति का परिणाम है I "अच्छे दिन" के आम आदमी के सोच को एक बुरे स्वप्न में परिणत कर दिया है I इस धोखेबाजी से ठगे एवं आक्रोशित कामगारों ने पुरे देश के पैमाने पर 2015 और 2016 में आम हड़ताल और 2017 में दिल्लीमें सकार के समक्ष महापड़ाव का आयोजन किया जिसमें विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों कोयला, स्टील, पोर्ट, डाक, बैंक, टेलीकाम, प्लांटेशन, सरकारी कर्मचारी, योजनाओं(स्कीम) के कामगार एवं अन्य श्रमिकों ने लगातार संघर्ष एवं हड़ताल का आयोजन कर अपना आक्रोश व्यक्त किया I खासकर पुरे देश में किसानों ने अपनी मांगों के समर्थन में सड़क पर निकलकर पुलिस की गोलियाँ खाई I

वास्तविकता में समस्तकामकाजी जनता अपने मांगों के समर्थन में एक ऐसे भय का सामना कर रहे हैं, जो उनके संघर्ष और एकता को कुचलने को उतारू है I यह भय और कुछ नहीं बस कामगारों को धर्म और जाती के आधार पर बाँट रही है I भाजपा और उनके आका आर एस एस आम आदमी के गुस्से से डरकर की कहीं जनता हमेंआने वाले दिन में सत्ता से बेदखल न कर दे, समाज में सम्प्रदायिकता एवं जाती विशेष की विद्वेष भावना जहर के रूप में फैला रही है I

सम्प्रदायिकदंगों का प्रतिशत 2014 से 2017 तक 28 प्रतिशत बढ़ गया है I इन तीन सालों में 3000छोटी बड़ी सम्प्रदायिक घटनाएँ हुई है, जिसमें 400 लोगों ने अपनी जान गवाई है तथा 9000 लोग घायल हुए हैं I सरकारी आंकड़े जो केस थाना एवं कोर्ट में दर्ज हैं के मुताबिक सम्प्रदायिक घटनाएँ 41 प्रतिशत की दर से बढ़ी हैं जो 2014 में 366 से बढकर 2017 में 475 हो गया I

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार में दलितों एवं दबे कुचले पर लगातार अत्याचार एवं आक्रमण बढ़ रहे हैं जिसमें मुख्य भूमिका आर एस एस एवं उनके सम्बद्ध संगठनों की है , इसके परिणामस्वरूप दलितों के जीवन यापन एवं सामाजिक अधिकार की सुरक्षा खतरे में है I

जबसे भाजपा सत्ता में आई है 2014 से ही 78 मामले सामूहिक रूप से एक समूह के द्वाराजो की आर एस एस के ही सन्गठन के हैं , गौरक्षा के नाम पर मुसलमानों और दलितों पर आक्रमण किया जा रहा है जिसमें 29 बेकसूर लोग मारे गये एवं 223 घायल हुए हैं I

संघ परिवार द्वारा दूसरे अल्पसंख्यक समूह ईसाईयों पर भी लगातार आक्रमण किया जा रहा है I पिछले चार सालों में 700 आक्रमण हुए जिसमेंचर्च, मिशनरीज और ईसाईयों के उत्सव अवसर शामिल है I

धर्मान्धता फैलाकर द्वारा कामगारों को अलग अलग कर उनकी एकता को बाँटने की चाल

सम्प्रदायिक जहर , झूठ एवं घृणा के माध्यम से आम लोगों के बीच प्रचारित कर बहुत सारे मुद्दों को संघ परिवार अपने उद्देश्यों के पूर्ति लिए सुनियोजित तरीकों से समाज में ध्रुवीकरणकर रहा है , जैसे"लव जिहाद", घर-वापसी,गोमांस,सम्प्रदाय आधारित जनसंख्या आकलन, पाकिस्तान और अंतर्राष्ट्रीय जिहादीयों आदिके नाम का सम्प्रदायिक जहर I हिन्दू धर्म एवं त्योहारों को हथियार प्रदर्शन और वर्चस्व की बात बना दीगई है, जिसमें अल्पसंख्यकों निशाना बनाया जा रहा है I भाजपा और संघ परिवार के नेतृत्वकारी लोग लगातार ऐसे घटनाओं का नेतृत्व कर रहे हैं और स्थानीय प्रशासन उन्हें मदद पहुंचाते हैं जिसके परिणामस्वरूप लगातार सम्प्रदायिक दंगे एवं तनाव हो रहे हैं I इतिहास में ऐसा पहली बार हो रहा है I

हमारे देश में विभिन्न धर्म के लोग सदियों से साथ रहते आये हैं I इतिहास गवाह है कि जब भी संघर्ष हुए हैं तो शासन एवं शासक केशोषण के खिलाफ हुए हैं चाहे वो स्थानीय राजा हो, जमींदार हो या अंग्रेज शासक I हर समय शासक वर्ग धर्म के आधार पर आम जनता को बाँट कर अपनी सत्ता को कायम रक्खा है,जैसे"बांटो और राज करो"Iइन सब के बावजूद विभिन्न सम्प्रदाय एवं धर्म के लोग एक साथ मिलकर खेत या कारखाने में काम किया तथाएक दुसरे के सुख-दुःखमें भागीदार रहे I ये सारी परम्परा और धरोहर आज खतरे में है I अगर भाजपा और आर एस एस अपनी नीति को जारी रक्खा तो वो दिन दूर जब इस देश में हिंसा एवं खुनी संघर्ष रोजमर्रा हो जाएगी I

आर एस एस और भाजपा के सम्प्रदायिक दुष्प्रचार एवं गतिविधियों से अल्पसंख्यक समुदाय में भी अतिवादी सोच बढ़ गई है इसका फायदा धार्मिक कट्टरवादी लोग अतिवाद और धार्मिकता को जोड़ उन्हें हिंसा के लिए उत्प्रेरित कर हिन्दू , मुसलमान और ईसाई कट्टरवादी को जन्म दे रहे हैं I

भाजपा; आर एस एस के दर्शन का साधन

यहाँ यह समझना आवश्यक है की भाजपा आर एस एस की सोच का साधन है और देश के कामकाजी जनता को बुनियादी मुद्दों से भटका रही है I

कुछ कामगार वर्ग सोचते है कि अगर क हिन्दू मुस्लिम दंगे होते हैं तो मुस्लिम कामगार के साथ भेदभाव होगा मेरा क्या ? यह बहुत बड़ी भूल है I

सच तो यह है कि भाजपा और आर एस एस के सन्गठन जैसे बी एम एस , कैसे हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा को स्थापित करने के उद्देश्य को सफल करें की सोच से काम करता है न की मजदुर वर्ग की हित को I यह बहुत ही स्पष्ट तरीके से आर एस एस के गुरु गोलवर करने वकालत की है की "हिन्दूरष्ट्र की स्थापना ही सरे समस्या का समाधान" है I वे अपनी किताब "हम या हमारे राष्ट्रवाद की परिभाषा" में लिखते हैं , " कौनराष्ट्र वादी नहीं है– जो स्वाभाविक रूप से हिन्दू प्रजाति , धर्म, सभ्यता एवं भाषा से बाहर हैं I असली राष्ट्रभक्त वही हैं जो हिन्दू सोच को महिमामंडित करता है , उसी के दिल में देश की भावना रह सकती है I इससे अलग जितने लोग हैं या तो गद्दार हैं या देश के दुश्मन I

किस प्रकार की राष्ट्र ? क्यासिर्फ हिन्दू राष्ट्र ? क्या ऐसी राष्ट्र की अवधारणा इस देश के सम्पूर्ण लोगों के लिए सुख, शांति एवं समृद्धि ला सकता है I जैसा की गोलवरकर कहते हैं जो हिन्दू नहीं है वह दोयम दर्जे का नागरिक है ,जैसेदास जिसका कोई अधिकार नहीं है I लेकिन हिन्दुओं के बीच जो बड़े उद्योगपति और जमींदार हैं वो मजदूरों के साथ दास जैसा ही व्यवहार करते हैं I जाती का बंटवारा भी वर्णाश्रम धर्म के आधार पर करते हैं , गोलवरकर कहते हैं कि वर्णाश्रम के आधार पर जातियों का बंटवाराही सही में हिन्दू धर्म का जीने का सही तरीका है I गोलवरकर मजदूरों के अधिकार के मांग पर भी अपना संकीर्ण विचार लिखते हुए कहते हैं" आज हम हर तरफ केवल अधिकार का शोर सुनते हैं , कहीं भी अपने कर्तव्य एवं निःस्वार्थ सेवा की भावना नहीं है I इसलिए हर जगह उद्योगपति एवं कामगारों के बीच बहुत सरे मुद्दों पर मतभेद सुनने को मिलता है , अंत: हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा में मजदुर केवल निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र हित में काम करे , परन्तु अपने जीवन एवं अधिकार का सपना न देखें I

गोलवरकर के अनुसार आर एस एस के पास मजदूरों की समस्या का एक ही निदान है कि उद्योगपति लोग हर राज्य एवं मजदूरों के कालोनियोंमें एक एक मंदिर का निर्माण करवा दे जहाँ साप्ताहिक रूप से भजन, कीर्तन एवं हरि कथा का आयोजन हो I आपको उत्पादन बढ़ाने के लिए सारा शक्ति झोंकना पड़ेगा और बदले में आपको कम वेतन एवं उच्च मूल्य पर खाद्य पदार्थ और दवाएँ मिलेगी , इसके बदले स्थानीय मंदिर में दर्शन कीजिये और गाते रहिये भजन कीर्तन I

गोलवरकर यह भी स्पष्ट कहते हैं की प्रजातंत्र एवं आम अधिकार का कोई उपयोग नहीं है , कुछ प्रबुद्ध नागरिक इस सम्बन्ध में पुरे देश को दिशा निर्देश दे सकते हैं I

इसलिए हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा में भाजपा और आर एस एस का सोच है कि हमारे देश में कोई चुनाव एवं ट्रेड यूनियनों को बनाने और हड़ताल पर जाने के अधिकार की आवश्कता नहीं।

इस तरह की विचारधारा अधिसंख्य रूप से सम्प्रदायिकता को बढ़ावा देती है और इसका जो भी रूप हो समाज एवं लोगों को बाँटती है I इसलिए यह मजदूरों के संगठित संघर्ष एवं आम आदमी के जीवन यापन को कमजोर करती है I

यह खतरनाक सोच आर एस एस और उसके राजनीतिक स्वरूप भाजपा बड़े कार्पोरेट घराना एवं जमींदारों के पसंद के हिसाब से आगे बढ़ा रहा है I

वह सोचते है कि अगर कामगारों को भेड़ो की तरह रखा जाए तो वे कम वेतन पर काम करेंगे और उन्हें शिक्षा स्वास्थ्य देने की आवश्यकता नहीं। इससे कारपोरेट जगत का मुनाफा बढ़ेगा। इसलिए टाटा बिड़ला और अंबानी जैसे उद्योगपति मोदी की दिन–रात प्रशंसा करते है।

अपनी आर्थिक मांगों के साथ–साथ मजदूर वर्ग की बीजेपी और आर एस एस की विचारधारा के खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। मजदूर वर्ग को सभी प्रकार की संप्रदायिकता के खिलाफ लड़ना होगा ताकि अपनी एकता को बचाए रखे क्योंकि मजदूर वर्ग की ताकत एकता में ही निहित है।

5 सितम्बर, 2018 की पार्लियामेंट के समक्ष रैली हमारे एकता और इसके बचाए रखने का संकल्प है। भारतवर्ष के मेहनतकश आवाम मजदूर किसान और खेतिहर मजदूर की एकता का संकल्प है जो ताकते हमारी एकता को कमजोर करके हमारे संघर्षों और हमारी मांगों को क्षति पहुँचाने की कोशिश करते उनके खिलाफ लड़ने का संकल्प है

एकतावाद संघर्ष की ओर